eYVh yoy eYVh xM ¼,e,y] ,eth½

एमएल एमजी व्यवस्था में एक शिक्षक अलग–अलग उम्र के बच्चों को एक साथ पढ़ाता है, और बच्चें एक समय में अलग–अलग विषयों में अलग–अलग स्तर पर काम करते हैं।

एमएल एमजी को मात्र शाला व्यवस्था के दृष्किोण से समझा जाता है, और यह उन छोटे स्कूलों में उपयोग किया जाता है, जहाँ एक–दो शिक्षक और पच्चीस–पचास बच्चे होते है, ताकि शिक्षक एक समय में एक से अधिक स्तरों के बच्चों को पढ़ा सके। लेकिन एमएल एमजी इससे अधिक है, यह मजबूरी में की हुई शाला व्यवस्था नहीं है। इसे हम पर्याप्त बच्चे और शिक्षक होने पर भी अपनाते हैं।

हमारी शाला में प्राथमिक शिक्षण 3 समूहों में होता है। प्रत्येक समूह में 5–11 वर्ष के बच्चे हैं। एक समूह को एक शिक्षक सभी विषय पढ़ाता है। ये समूह अलग–अलग उपसमूहों मे बंटे हैं, और प्रत्येक उपसमूह में समान स्तर के बच्चे होते हैं, ये उपसमूह अलग–अलग विषयों के लिए अलग हैं, बच्चों के उपसमूह उनकी सीखने की गति के अनुसार बदलते रहते हैं, क्योंकि हमारा मानना है कि बच्चों के सही विकास के लिए

उनका अपने से बड़े–छोटे बच्चों के साथ मित्रता करना जरूरी होता है। अतः एमएल एमजी की व्यवस्था अपनाने से बच्चे अपने से बड़े एवं छोटे बच्चों के साथ मित्रता करने से हिचकिचाते नहीं है, साथ ही यदि उन्हें किसी प्रश्न पर समस्या हो रही हो तो उसे वे बड़े बच्चों की मदद से आसानी से हल कर लेते है। हमारा मानना है कि जीवन के उन तमाम छोटे–बड़े अनुभवों एवं दिक्कतों जिनका सामना बच्चों को करना होता है, वे अपने बड़े मित्रों की मदद से ज्यादा आसानी से समझ सकते हैं। अपने से बड़े और कुछ छोटे मित्रों के साथ रहना वैसा ही शिक्षाप्रद अनुभव होता है जैसा कि व्यस्क और प्रौढ़ शिक्षक के साथ काम करने से होता है, परन्तु कक्षायी व्यवस्था इसे असम्भव बनाती है।

हमारे यहाँ बच्चों के सीखने की गति में भी स्वतंत्रता होती है, यह उपसमूह व्यवस्था में दिखाई देता है, क्योंकि हमारा मानना है कि बच्चों में ज्ञानार्जन की सबसे बड़ी शर्त आजादी होती है। इन्हें एक समूह में बांध कर नहीं रखा जाता, बल्कि इनके सीखने की क्षमता के अनुसार बच्चों का उपसमूह बदलता रहता है।

जब बच्चों की किसी गतिविधि पर काम होता है तो यह नहीं कहा जा सकता कि उसकी अवधारणाएँ पूरी तरह से स्पष्ट हो गई हैं। हमारी तरह की कक्षा व्यवस्था में बच्चा अपने से अधिक स्तर के बच्चों के साथ हो रहे काम को देखता है और जब वही काम उसके साथ हो रहा होता है तो उसमें ज्यादा स्पष्टता आती है, और जब वही काम उनसे छोटे बच्चों के साथ होता है तो उनकी अवधारणाएँ और ज्यादा स्पष्ट हो जाती है। इस प्रकार बच्चा अपने साथियों से सीखता है, और उन्हें सीखने में मदद करता है।

eYVh ysoy eYVh xzsM ¼,e,y] ,eth½